एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

जेराल्डटन वैक्सः खेती प्रबंधन एवं बाजार की संभावनाएं

*विकास यादव, रूपाली शर्मा एवं संदीप भारद्वाज
चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हरियाणा, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: vikasydv100@gmail.com

जेराल्डटन वैक्स (चमेलाउशियम) ऑस्ट्रेलिया के पश्चिमी हिस्से का एक सदाबहार झाड़ीदार पौधा है। यह मायरटेसी कुल से आता है। इसके फूलों पर मोम जैसी चमक होती है और इसकी पत्तियां सुगंधित होती हैं। इसके फूलों की शेल्फ लाइफ लंबी होती है, जिससे कट फ्लावर बाजार में इसकी मांग ज्यादा है। इसके फूल सफेद, गुलाबी, लाल और बैंगनी रंगों में मिलते हैं। मुख्य रूप से इसका उत्पादन ऑस्ट्रेलिया, इजराइल, दक्षिण अफ्रीका और अमेरिका में होता है। भारत में भी संरक्षित खेती के तहत इसकी व्यावसायिक संभावनाएं बढ़ रही हैं।

उपयोग

- कट फ्लावरः फूलों के गुलदस्ते और सजावट में फिलर के रूप में।
- सजावटः शादियों होटलों और दफ्तरों में फ्लोरल डिजाइन के लिए।
- आवश्यक तेलः इसकी खुशबूदार पत्तियों से तेल निकालने की संभावनाओं पर शोध जारी है।

प्रमुख किस्में

व्यावसायिक रूप से उगाई जाने वाली कुछ मुख्य किस्में निम्नलिखित हैं:
अल्बा, पर्पल प्राइड, लेडी स्टेफनी, डांसिंग क्वीन, माई स्वीट सिक्सटीन, पिंक रफल्स, लॉरा और कॉटन कैंडी।
नोटः किस्म का चुनाव करते समय स्थानीय मौसम, बाजार की मांग को ध्यान में रखे।

जलवायु और मिट्टी

- धूप व तापमानः इस पौधे को भरपूर धूप की जरूरत होती है। हल्की ठंड इसके विकास के लिए अच्छी है, लेकिन तेज पाला नई कलियों को नुकसान पहुंचाता है।
- मिट्टीः पानी की अच्छी निकासी वाली दोमट या बलुई दोमट मिट्टी सबसे बेहतर होती है।
- ची मानः मिट्टी का ची 5.5 से 6.5 के बीच होना चाहिए।
- खेत की तैयारीः भारी या पानी रुकने वाली जमीन में इसे न लगाएं। अगर ऐसी जमीन हो, तो उठी हुई क्यारियों पर रोपाई करें। खेत की 2 से 3 बार गहरी जुताई करके खरपतवार साफ करें और सड़ी हुई गोबर की खाद मिलाएं।

प्रवर्धन (पौध तैयार करना)

जेराल्डटन वैक्स को तैयार करने के लिए तना कलम का इस्तेमाल किया जाता है:

- कलम हमेशा स्वस्थ और रोगमुक्त पौधों से ही लें।
- कलम की लंबाई 7 से 10 सेंटीमीटर होनी चाहिए।

- बेहतर जड़ विकास के लिए कलमों के निचले हिस्से को रोपने से पहले आईबीए के 4000 मि.ग्रा./लीटर वाले घोल में लगभग 40 सेकंड तक डुबोकर रखें।
- नए किसानों के लिए प्रमाणित नर्सरी से सीधे तैयार पौधे खरीदना ज्यादा सुरक्षित रहता है।

रोपाई की विधि

- समयः इसकी रोपाई आमतौर पर वसंत या शरद ऋतु में की जाती है।
- दूरीः पौधों के बीच की दूरी 1.0 मीटर और कतार से कतार (लाइन से लाइन) की दूरी 1.5 से 2.0 मीटर रखें।
- रोपाई के बादः रोपाई करते ही हल्की सिंचाई करें ताकि जड़ें मिट्टी पकड़ लें। शुरुआती हफ्तों में नियमित ध्यान रखें और सूखे हुए पौधों की जगह तुरंत नए पौधे लगाएं।

खाद, उर्वरक और सिंचाई

- खादः रोपाई के समय गोबर की खाद या कम्पोस्ट दें। संतुलित नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश का इस्तेमाल करें। ज्यादा नाइट्रोजन देने से टहनियां जरूरत से ज्यादा कोमल हो जाती हैं जिससे फूलों की गुणवत्ता गिरती है। खाद को तने से थोड़ी दूरी पर देकर तुरंत पानी दें।
- सिंचाईः जेराल्डटन वैक्स को बहुत ज्यादा पानी की जरूरत नहीं होती। केवल तभी पानी दें जब मिट्टी की ऊपरी सतह सूखी दिखने लगे। खेत में पानी रुकने से जड़ गलन की बीमारी होती है।
- ड्रिप सिस्टमः व्यावसायिक खेती के लिए ड्रिप इरिगेशन सबसे सही तरीका है। इससे पानी सीधे जड़ों तक पहुंचता है और फालतू खरपतवार नहीं उगते।

खरपतवार और छंटाई

- निराई–गुड़ाईः शुरुआती समय में खरपतवारों को नियमित रूप से निकालते रहें। नमी बनाए रखने और खरपतवार रोकने के लिए पौधों के आसपास मल्चिंग का इस्तेमाल करें।
- छंटाईः सूखी, टूटी या बीमारी वाली टहनियों को समय–समय पर काटते रहें ताकि हवा का बहाव ठीक रहे और नई शाखाएं निकलें।

कीट और रोग प्रबंधन

प्रमुख कीट

- कीटः एफिड (चेपा), थ्रिप्स, बीटल, वीविल और निमेटोड। ये नई पत्तियों और कलियों का रस चूसते हैं जिससे फूल छोटे रह जाते हैं।
- बचावः खेत को साफ रखें और जरूरत पड़ने पर कृषि विशेषज्ञों की सलाह से उचित कीटनाशक का छिड़काव करें।

प्रमुख रोग

- रोगः जड़ गलन, बॉट्राइटिस फ्लावर ब्लाइट, राइजोक्टोनिया, अल्टरनेरिया और पाउडरी मिल्ड्यू।

बचाव के उपायः

- खेत में पानी का जमाव बिल्कुल न होने दें।
- पौधों के बीच हवा का वेंटिलेशन अच्छा रखें।
- संक्रमित हिस्से या टहनियों को तुरंत काटकर खेत से दूर नष्ट कर दें।

विशेष समस्याएं

क्लोरोसिस (पत्तियों का पीला पड़ना)

यह मिट्टी में पोषक तत्वों की कमी या ज्यादा पानी के कारण होता है। इसके लिए मिट्टी की जांच करवाकर जरूरी पोषक तत्व दें।

फूलों का झड़ना

इसके मुख्य कारण हैं:

- बॉट्राइटिस बीमारी का असर।
- पानी की कमी।
- ट्रांसपोर्ट के दौरान ज्यादा झटके लगना।
- बहुत ज्यादा तापमान या एथिलीन गैस का प्रभाव।
- बचावः पौधों में नमी का संतुलन रखें और फूलों को सीधी धूप व झटकों से बचाएं।

कटाई और ग्रेडिंग

- सही समयः जब टहनी पर 50 से 80 प्रतिशत फूल पूरी तरह खिल चुके हों, तब कटाई करें।
- तरीकाः कटाई सुबह या शाम के ठंडे समय में ही करें। साफ और तेज कटर का इस्तेमाल करें। कटाई के तुरंत बाद टहनियों को साफ पानी से भरी बाल्टी में रखें और छांव में ले जाएं।

अच्छी गुणवत्ता के मापदंड

- टहनियां लंबी, सीधी और मजबूत होनी चाहिए।
- फूल एक बराबर आकार के और घने होने चाहिए।
- पत्तियां गहरे हरे रंग की और रोगमुक्त हों।

कटाई के बाद का प्रबंधन और कोल्ड चेन

- शीत भंडारणः फूलों को लंबे समय तक ताजा रखने के लिए तापमान को नियंत्रित करना जरूरी है। 0 से 1° सेल्सियस तापमान पर स्टोर करने से फूल लगभग दो सप्ताह तक ठीक बने रहते हैं।
- शेल्फ लाइफ बढ़ाने के तरीकेः व्यावसायिक स्तर पर एथिलीन के असर को कम करने के लिए सिल्वर थायोसल्फेट या 1–मिथाइलसाइक्लोप्रोपीन (1–एमसीपी) का इस्तेमाल किया जाता है। इससे कलियां समय से पहले नहीं झड़तीं।
- घरेलू रखरखावः फूलदान में रखने से पहले टहनियों के निचले हिस्से को तिरछा काटें और हर 2 से 3 दिन में पानी बदलते रहें। पानी में डूबने वाली पत्तियों को हटा दें।

बाजार और विपणन श्रृंखला

जेराल्डटन वैक्स की मांग मुख्य रूप से बड़े शहरों और निर्यात बाजारों में होती है। बाजार तक इसका सही सफर इस प्रकार होता हैः

प्रमाणित नर्सरी – किसान (खेती) –छंटाई और पैकिंग (ग्रेडिंग) –कोल्ड स्टोरेज –थोक व्यापारी या निर्यातक – फूल विक्रेता (फ्लोरिस्ट) –ग्राहक (उपभोक्ता)

सलाहः खेती शुरू करने से पहले स्थानीय फ्लोरिस्ट, होटल डेकोरेटर्स या एक्सपोर्टर्स से संपर्क जरूर कर लें।

निष्कर्ष

मूल रूप से ऑस्ट्रेलिया के शुष्क इलाकों का पौधा होने के कारण जेराल्डटन वैक्स सूखा आसानी से सह लेता है ,लेकिन भारत की भारी बारिश और नमी वाले मौसम में इसकी जड़ों को सड़ने से बचाना सबसे बड़ी चुनौती रहती है। इसी वजह से भारत में इसकी खेती खुले खेतों के बजाय पॉलीहाउस या शेड नेट के अंदर उठी हुई क्यारियों पर करना सही रहता है। भारतीय कट–फ्लावर बाजार में शादियों और कार्यक्रमों के दौरान सजावटी फिलर फ्लावर्स की मांग बनी रहती है। दिल्ली, मुंबई या बेंगलुरु जैसी बड़ी मंडियों के व्यापारियों और स्थानीय डेकोरेटर्स से अगर पहले से संपर्क हो, तो इसकी बिक्री में आसानी होती है। शुरुआत करने वाले किसानों के लिए बेहतर रहेगा कि वे पहले एक छोटे हिस्से में ही इसे लगाकर अपने इलाके की मिट्टी और मौसम के हिसाब से इसकी आदत समझें।